रिकॉर्ड :– छोड़ भी दे आकाश सिंहासन.... ओम् शान्ति। भगवानुवाच, भगवान बैठ सन्मुख बच्चों को समझाते हैं। भगवान तो निराकार को कहते हैं। सारी दुनिया निराकार को ही भगवान कहेगी; क्योंकि जीव आत्माएँ तो मनुष्य सृष्टि में हैं। सूक्ष्मवतन में भी जीव आत्माएँ हैं। ब्र०वि०शं० को भी सूक्ष्म शरीर है ना। बाकी महिमा एक ही परमपिता प० की है। उनको बुलाते ज़रूर है। उनके आने का भी समय है। गीत भी बताते हैं कि जब दुनिया बहुत दुखी, पतित होती है और फिर रावण का राज्य खतम होने पर होता है और राम राज्य स्थापन होने का है तब तो आवेंगे ना; और एक ही बार आते हैं। आकर स्वर्ग की राजाई बनाते हैं। जैसे देखो, बड़े–2 डैम्स अथवा ब्रीजिज़ बनाते हैं। उनका भी फाउंडेशन बड़े–2 आदमी आकर डालते हैं; और जब वो तैयार हो जाते हैं, मशीन आदि लग जाती हैं, तो भी बड़े आदमी आकर टेप काट कर उसका उद्घाटन करते हैं। फिर कहेंगे, डैम का दरवाजा खुल गया। वैसे ही ये बेहद का बाप भी कहते हैं– मुझे आकर स्वर्ग का फाउंडेशन लगाना पड़ता है। मैं इस ब्रह्मा तन में आए फाउंडेशन लगाता हूँ। फिर जब किंगडम पूरी तैयार हो जाती है तब मैं ही गेट खोलता हूँ मुक्ति और जीवनमुक्ति का। सबसे बड़ा आदमी तो मैं हूँ। फाउंडेशन भी मैं लगाता हूँ। अब तुम बच्चे जानते हो कि परमपिता प० ने फाउंडेशन लगाया है स्वर्ग का। जिन्होंने कल्प पहले राज्य किया था वो ही अब करेंगे। तो राज्य अब स्थापन हो रहा है गुप्त रूप में। बाबा खुद भी गुप्त है। उनकी स्थापना भी गुप्त है। बाबा ने अब आकर फाउंडेशन लगाया है। फाउंडेशन बाद ही सब तैयारी होती है। जब बनकर तैयार हो जाता है तब आकर फाटक खोलते हैं, जिसको ओपनिंग सेरीमनी कहते हैं। दो–चार बड़े–2 आदमी आते हैं, एक तो फाउंडेशन समय, दूसरा जब तैयार हो जाए तब गेट खोलने। बाप समझाते हैं कि आधा कल्प से भगत याद करते हैं। बाबा ने ये भी समझाया था कि भक्तिमार्ग में ही दो बाप होते हैं। ज्ञानमार्ग में, सतयुग में एक ही बाप होगा। वहाँ परमधाम वाले बाप को कोई याद नहीं करते; क्योंकि वो बाप आधा कल्प के लिए सुख देकर, खुद छिप जाते हैं। सतयुग में उनको कोई ढूँढ़ते नहीं, न दरकार है। बच्चे सुखी हो गए फिर पुकारें क्यों! पुकारते तब हैं जब रावण की सेना 5 विकार तंग करते हैं। उनसे छुड़ाने लिए मुझे आना पड़ता है। अब मैंने फाउंडेशन डाल दिया है। बच्चे जानते हैं, स्वर्ग जाने लिए बाबा ने फाउंडेशन लगाया है। जब पूरी राजधानी स्थापन होगी तो गेट खोल देंगे, सभी मुक्तिधाम और जीवनमुक्तिधाम चले जाएँगे। मैं मानुष से देवता बनाने का फाउंडेशन लगाता हूँ। अब बनते जाते हैं। ड्रामा अनुसार बनना ही है। फुल तैयारी होगी तो फिर बाबा टेप खोल देंगे। तो सब आत्माएँ इस रावण के जेल से छूट ढेर के ढेर भागेंगे। मुक्तिधाम जाए फिर जीवन मुक्तिधाम जावेंगे। वो है शान्तिधाम और सुखधाम। ये है दुखधाम। वहाँ अशांति होती नहीं; क्योंकि वहाँ माया होती नहीं। रावण खतम हो जाता है। देखो, रावण को मारते भी बारूद से हैं; परन्तु उनको ये पता नहीं कि यह रावण राज्य है। रावण ने ही सभी को पतित बनाया है। सभी को जेल में डाला है। सभी का सद्गति दाता राम। सभी सीताएँ एक राम को याद करती हैं। वो खुद आए सभी को जेल से छुड़ाते हैं। अब स्वर्ग के गेट और मुक्ति के गेट खुलने हैं। स्वर्ग का है राम का द्वार और नर्क है रावण का द्वार। इस समय सभी रावण के जेल में हैं। अपन महसूस करते हैं बरोबर सभी जनावर, पिंजरे में फँसे हुए हैं। फँसते हैं जनावर। इसलिए इन्हों को बंदर कहा गया है। इस समय के ह्युमन्स और स्वर्ग के ह्युमन्स में देखो कितना फर्क है। स्वर्ग के ह्युमन्स के तो मंदिर बने हुए हैं। नर्कवासी, स्वर्गवासियों की

महिमा करते हैं। खेल देखो कैसा बना हुआ है। बच्चों को पता है कि सारी दुनिया रावण रूपी शेर के पिंजरे में बंद है। रावण ने डर्टी ब्रूट बनाय दिया है। सिक्ख लोग भी गाते हैं– मूत पलीती... तो डर्टी हुए ना; परन्तु इन्हों को पता नहीं कि विख के कारण मूत पलीती कहा जाता है। बाबा आकर उन्हों को साफ करते हैं। बाकी गुरुनानक तो सुख–शांति नहीं स्थापन करते। यह काम एक ही का है। यह कोई मनुष्य कर न सके। जो सिकीलधे हैं वो ही अब देवता बनने का पुरुषार्थ करते हैं। सभी तो स्वर्ग नहीं जाएँगे। जिन्होंने कल्प पहले पद पाया होगा वे पाएँगे अथवा दैवी धर्म में ट्रांसफर होंगे। पहले तो शूद्र से ब्राह्मण धर्म में ट्रांसफर होना पड़े। और धर्म वाले तो आकर सिर्फ एक धर्म स्थापन करते हैं। झट क्रिश्चियन, बौद्धी बनाए देते हैं। उन्हों की है ह्युमन मशीनरी धर्म बढ़ाने की। तुमको फिर पहले शूद्र से ब्राह्मण बनाया जाता है। पहली–2 रचना है ब्रह्मा द्वारा। गाया भी जाता है ब्रह्मा की क्रियेटर। आत्माएँ तो अविनाशी रची ही हुई हैं। सभी को अपना–2 पार्ट मिला हुआ है। बाकी क्रियेट करना है स्वर्ग को। गीता है स्वर्ग स्थापन करने वाला मु(ख्य) शास्त्र। भगवान ने आकर जब स्वर्ग वा देवता धर्म की स्थापना की है, वो ही अब फाउंडेशन लगाय रहे हैं। फिर गेट्स खुलने हैं। महाभारत लड़ाई सामने हैं। सभी आत्माएँ वापस अप(ने) शांतिधाम, स्वीटहोम भागनी हैं। हमारी बुद्धि में सुखधाम टपक–2 रहा है। उठते–बैठते हम उनका वर्णन कर सकते हैं। जिसकी बुद्धि में चलता ही नहीं वो क्या वर्णन करेगा! तो बाप पहले शूद्र से ब्राह्मण बनाते हैं। सुख घनेरे तो स्वर्ग में मिलने हैं। उसके लिए अब हम पुरुषार्थ करते हैं। जो जैसा पुरुषार्थ करता है, वो बाप और अनन्य बच्चे देख रहे हैं। बाप कहते हैं, मम्मा–बाबा को फॉलो करो। सदैव माँ–बाप ही तो राज्य नहीं करेंगे। ज़रूर नम्बरवार बच्चे भी तो राज्य करेंगे। बच्चे गद्दी पर बैठेंगे तो फिर माँ–बाप सेकेण्ड नम्बर में आ जावेंगे। ऐसे नम्बरवार माला फिरती है। वन नम्बर फिर नीचे आवेगा ना। ऐसे एक/दो पर विजय पानी है। इसलिए बाप कहते हैं, फॉलो मदर–फादर। गद्दियों की भी माला है। बच्चे जानते हैं कि हम स्वर्ग स्थापना में कितने मददगार हैं। उस अनुसार कितना पद पाएँगे। ये सारी बुद्धि की बात है। बाबा ये बुद्धि के लिए फुड अथवा खुराक देते हैं। फिर जो जितना हज़म करे और फिर औरों को भी खिलाते रहे। यह है ज्ञान की बातें, बाकी भोग आदि वो तो चिटचैट, हँसी–कुड़ी। कहते हैं, कृष्ण माखन खाता था। वो सभी दिव्य दृष्टि की चाबी तो बाबा के पास है। जादूगर वो है, न कि कृष्ण। बाबा बैठ सृष्टि के आदि–मध्य–अंत का राज़ समझाते हैं। कृष्ण तो छोटा बच्चा है। वो तो इतना ज्ञान दे न सके। ज़रूर बुजुर्ग चाहिए। ब्रह्मा आदिदेव बुजुर्ग दिखाते हैं। उनके हाथ में शास्त्र दिखाए हैं। कृष्ण के हाथ में तो नहीं देते। ब्रह्मा की मत भी गाई हुई है। श्रीमत भी गाई हुई है। तो ब्रह्मा तो बड़ा हो गया। कृष्ण को प्रजापिता नहीं कह सकते। वो तो बच्चा है। महिमा तो बड़े की होती है। विद्वान–आचार्य कितने मूँझे हुए हैं। कृष्ण का दिन और रात नहीं कही जाती। ब्रह्मा का दिन, ब्रह्मा की रात गाई जाती है। ब्रह्मा ही रात अथवा भक्ति में जन्म लेता है। ब्रह्मा ही सतयुग–त्रे(ता) में अर्थात् दिन में जन्म लेंगे। ब्रह्मा और ब्रह्मावंशावली के लिए दिन और रात गाया हुआ है। बाप समझाते हैं, तुम ब्राह्मण ही फिर देवता बनते हो। फिर 63 जन्म रावण राज्य में आना पड़ता है। पहले तुम आते हो, फिर नम्बरवार दूसरे आते हैं। बाप समझाते हैं, महाभारत लड़ाई के समय पाण्डव और कौरव 5000 वर्ष पहले थे, अब भी हैं। अब फिर से वही श्रीमत भगवत गीता भी आरम्भ है। दैवी किंगडम बन जाएगी, फिर लड़ाई भी आरम्भ हो जाएगी और फाटक खुल जाएँगे। गेट वे ऑफ इंडिया है ना बॉम्बे में। फिर देहली में भी गेट वे ऑफ इंडिया है। भला दो गेट क्यों हैं? क्रिश्चियन लोग पहले बॉम्बे में समुद्र रास्ते आए थे, उस समय ..... प्लेन तो थे नहीं,

फिर देहली में क्यों है? मुसलमान लोगों ने जब इन्वेंट किया था तो देहली को घेरा किया था। वो फिर जमीन के रास्ते उस तरफ आए। उन्हों की भी कितनी राजाई चली। तो वो मुसलमानों का, वो क्रिश्चियन्स का हो गया। जैसे दोनों गेट से आए भारत पर कब्जा किया। अब हमा(रा) बाबा फिर आता है परमधाम से। वो तो जैसे रॉकेट है। आत्मा रॉकेट है ना। यह भी कोई को पता नहीं कि आत्मा रॉकेट है, कब विनाश नहीं होती। हर एक आत्मा में कितना बड़ा पार्ट भरा हुआ है। 84 जन्मों का कितना बड़ा रिकॉर्ड है। अगर 84 लाख जन्म होते, तो इतना बड़ा रिकॉर्ड कैसे हो सकता! हम 84 जन्मों के रिकॉर्ड को देख ही वंडर लगता है। सो 84 लाख का तो हो न सके। हिस्ट्री को फिर रिपीट भी तो होना है। ऐसे–2 विचार–सागर–मंथन करने से बड़ा मज़ा आता है। अब हम जानते हैं, सभी का पार्ट का रिकॉर्ड पूरा हुआ है। सभी ने अपना पार्ट पूरा बजाया। अब सभी को वापस जाना है। कहा जाता है– बनी–बनाई.... कोई नई बात नहीं। पूछते हैं, सिर्फ ब्रह्मा के तन में क्यों आते वा भारत में ही क्यों आते? ड्रामा को भी समझना है। ब्रह्मा में क्यों आते हैं? ब्रह्मा को ही आदिदेव कहते हैं। ब्रह्मा की मत और श्रीमत मशहूर है। अब तुम जानते हो, ये है उनका मुरब्बी बच्चा। फिर सेकण्ड नंबर है ब्रह्मा। फिर नम्बरवार बच्चे हैं, जो नम्बरवार गद्दी पर बैठेंगे। तुमको समझाणी तो बड़ी सहज मिलती है। भल कोई पत्थरबुद्धि भी सुनते–2 आखिर ठीक हो जाए। अपन को गॉडली स्टूडेंट समझे। हमको भगवान पढ़ाए कर देवता बनाते हैं– सिर्फ इतना भी समझे, तो भी बेड़ा पार हो जाए; परन्तु इतना भी याद नहीं रहता। तुम समझाए सकती हो कि वैकुण्ठ का फाउंडेशन लग चुका है। जब यादव–कौरव–पाण्डव थे तो फाउंडेशन लगाने वाला भी था। पाण्डव पति और कौरव पति क्या करत भय? पाण्डव पति, कौरव पति तो यहाँ है। बाकी यादव पति की तो बात नहीं। गीता की समझाणी सारी भारत के लिए है। यादवों के लिए तो दिखाया है, शराब पीकर मूसलों द्वारा अपने कुल का विनाश किया। प्रैक्टिकल भी देखने में आता है। वो यूरोपवासी यूरोप में। चीन–बौद्धी, इस्लामी, क्रिश्चियन सभी आ जाते हैं। उस तरफ अनेक धर्म हैं। भारत में एक ही धर्म है। उनमें पाण्डव–कौरव हैं। कौरव कब बने? जब प्रजा का राज्य हुआ, तबसे पाण्डव भी स्थापन हुए। अब पाण्डवपति राजयोग सिखलाए रहे हैं। स्वर्ग की स्थापना हो रही है। पूरी हो जाएगी तो लड़ाई आरंभ हो जाएगी और गेट्स खुल जाएँगे। फिर जयजयकार हो जाएगी। पहले हाहाकार होकर फिर जयजयकार होगी। लड़ाई में हाहाकार होती है ना। फिर जयजयकार होती है। फिर तो देवताओं के फाटक पर सदैव बीन बजेगी। राजाओं के फाटक पर भी बीन–बाजे बजते हैं। यह भी फैशन था। खुशी के बाजे बजते रहते थे। स्वर्ग में तो आलीशान महल होंगे। बाप कहते हैं, मैं फाउंडेशन डाल रहा हूँ। गीत भी गाते हैं– यदा यदा हि धर्मस्य.... तो ज़रूर भगवान आते हैं ना। पतित फाटक से निकाल पावन बनाने लिए भगवान को ही आना है। ऊँच ते ऊँच वो एक है। बाप कहते हैं, मैं कब किसको दुख नहीं देता हूँ। दुख रावण देता है। ये बातें कौरव लोग थोड़े ही जानते हैं। उन्हों को ऐसे ही जाना है। ऐसे नहीं कि अंत में आकर मत लेंगे। नहीं। विनाश काले विपरीत बुद्धि है ना। प्रीत बुद्धि है पांडवों की। गीता के भगवान साथ पाण्डवों की प्रीत थी और कौरवों की विनाश काले विपरीत बुद्धि थी। उन्हों का विनाश हुआ, पाण्डवों की जयजयकार हुई। यह भी नूँधा हुआ है। रक्त के नदियों बाद घृत की नदियाँ बहेंगी। घृत की नदियाँ नहीं बहतीं; परन्तु वहाँ दिखाते हैं, कृष्ण बहुत मक्खन खाता था, तो जैसे दूध–घृत की नदियाँ बहती थीं। ये सभी हैं चिटचैट। विद्वान–पण्डितों ने

शास्त्रों में झूठी कहानियाँ बहुत बनाए दी हैं, जिससे मनुष्यों को बेमुख करते हैं। यह भी ड्रामा में नूँध है। ये भी झूठी कहानियाँ आदि बनाने लिए भी बाँधे हुए हैं ड्रामा अनुसार। कहावत है ना– झूठी माया, झूठी काया..... माया का प्रवेश होने से ही झूठ आरम्भ हो जाता है। ये तुम बताए सकते हो। इसमें डरने की कोई बात नहीं। पूछते हैं ना कि शास्त्रों को तुम झूठा क्यों कहते हो? बोलो– अरे, तुम ही कहते हो, झूठी माया, झूठी काया, झूठा सब संसार। ये है ही पतित दुनिया। पतित कहा जाता है पाप आत्माओं को। गाँधी भी कहते थे– पतित–पावन सीता–राम। पतित कब बनते हैं, रावण राज्य कब आरंभ होता है– यह थोड़े ही जानते हैं। ये शास्त्र तो सभी पतित मनुष्यों ने बनाए, तो राधे–कृष्ण, ब्रह्मा आदि सभी को पतित बताए दिया, जैसी दृष्टि वैसी सृष्टि। बाबा बच्चों को समझाते तो बहुत हैं; परन्तु धारणा कर और सुनाने लायक भी जब कोई बने। कितनी मुश्किलात है। श्रीमत पर नहीं चलते। गरीबों को फिर भी भावना रहती है। दुखी हैं। साहुकार लोग तो बहुत सुखी बैठे हैं। यह भी ड्रामा में नूँध है; इसलिए गाया हुआ है– अहिल्याएँ, कुब्जाएँ। भल कोई प्रजा बनती है अथवा दास–दासियाँ बनती हैं, फिर भी इस समय के प्रेसिडेंट से तो ये भाग्यशाली हैं। उनको भी खुश होना चाहिए। वो तो स्वर्ग का भी मुँह नहीं देखेंगे। देखो, बाबा की यह मुरली सभी ब्राह्मण कूल भूषणों के सामने चलती है। सभी जानते हैं, आत्माएँ सभी भागेंगी। हमको भी जाकर नया चोला पहनकर आना है। अब जैसे वनवाह में बैठे हैं। कन्या को शादी के पहले वनवाह में बिठाते हैं तो फटे कपड़े पहनते हैं। तुमको भी अब ससुर घर जाना है। तो इस दुनिया से दिल न लगानी है। अच्छा, बच्चों को गुडमॉर्निंग। ॐ

बापदादा का डायरैक्शन :– पाण्डव गवर्मेन्ट को चाहिए, 2 आर्टिस्ट हो, जो अपने ढंग के चित्र बनावे और दुकान निकाले। चित्रों को(के) फ्रेम आदि बनाने जानते हो। ब्राह्मण कुल भूषण हो। अच्छा–बड़ा दुकान चित्रों का बनाना है; और देहली में ये बड़ी कारोबार होनी है। चित्र हज़ारों बनेंगे और बड़े कारोबार हैं। कौन संभाल सकता है, कैसे संभाल सकते हैं सो लिख भेजे। बहुत सर्विसएबुल कारोबार है। कहाँ से कोई होशियार अनुभवी इस फ्रेम बनाने और आर्टिस्ट हो, जो लिखत भी अच्छी जानता हो और चित्र अपने ढंग के अच्छे बनाए जानता हो। अच्छा रॉयल कारोबार है। साथ–2 फोटोग्राफी का काम, फिल्म धोने आदि का जानते हो। सभी लिटरेचर भी उनके हाथ में रहना है। कोई बड़ी मार्केट में दुकान खोल सके, जो जल्दी नामी हो जाए। अगर अमृतसर में किफायत से फ्रेम आदि बनते हैं तो भी समाचार दे; परन्तु हेड ऑफिस देहली बेहतर है। यह कार्य फौरन खोल सकते हैं। ॐ हैलो, सर्व सेन्टर्स के दैवी बहन–भाइयों प्रति रुकमणि बहन की मधुर स्मृति मधुबन स्वर्गाश्रम में स्वीकार हो। ड्रामा अनुसार अजमेर सर्विस पर जाना हुआ। वहाँ से बापदादा से मिलने का गोल्डन चांस मिल गया है। आज तो कुमारिका बहन ..... है। उनसे भी मिलने का मौका मिल गया है। दो दिन का ही चांस है।